लघु सिद्धांत कौमुदी विषयक वक्तव्य: 01

माहेश्वर सूत्र

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के प्रथम पत्र की द्वितीय अन्विति 'लघु सिद्धांत कौमुदी विषयक माहेश्वर सूत्रों का परिचय)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

माहेश्वर सूत्र

पाणिनि अष्टाध्यायी का आधार माहेश्वर सूत्रों पर टिका है। विद्वानों का ऐसा मानना है कि इन माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

अर्थात:- "नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (शिव) ने सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना के उद्धार (पूर्ति) के लिये नवपंच (चौदह) बार डमरू बजाया। इस प्रकार चौदह शिवसूत्रों का ये जाल (वर्णमाला) प्रकट हुआ।"

डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ। इसलिये व्याकरण सूत्रों के आदि-प्रवर्तक नटराज को माना जाता है। प्रसिद्धि है कि महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया जो कि पाणिनीय संस्कृत व्याकरण का आधार बना।

माहेश्वर सूत्रों की **कुल संख्या 14** है जो निम्नलिखित हैं:

1. अइउण्

2. ऋऌक्
3. एओङ्
4. ऐऔच्
5. हयवरट्
6. लण्
7. ञमङणनम्
8. झभञ्
9. घढधष्
10. जबगडदश्
11. खफछठथचटतव्
12. कपय्
13. शषसर्
14. हल्

माहेश्वर सूत्रों की व्याख्या

उपर्युक्त 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के वर्णों (अक्षरसमाम्नाय) को एक विशिष्ट प्रकार से संयोजित किया गया है। फलतः, पाणिनि को शब्दों के निर्वचन या नियमों मे जब भी किन्ही विशेष वर्ण समूहों (एक से अधिक) के प्रयोग की आवश्यकता होती है, वे उन वर्णों (अक्षरों) को माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाकर संक्षेप मे ग्रहण करते हैं। माहेश्वर सूत्रों को इसी कारण 'प्रत्याहार विधायक' सूत्र भी कहते हैं। प्रत्याहार बनाने की विधि तथा संस्कृत व्याकरण मे उनके बहुविध प्रयोगों को आगे दर्शाया गया है।

इन 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों को समावेश किया गया है। प्रथम 4 सूत्रों (अइउण् – ऐऔच्) में स्वर वर्णों तथा शेष 10 सूत्र व्यंजन वर्णों की गणना की गयी है। संक्षेप में स्वर वर्णों को अच् एवं व्यंजन वर्णों को हल् कहा जाता है। अच् एवं हल् भी प्रत्याहार हैं।

प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के 71वें सूत्र 'आदिरन्त्येन सहेता' (1/1/71) सूत्र द्वारा प्रत्याहार बनाने की विधि का पाणिनि ने निर्देश किया है।

आदिरन्त्येन सहेता (1/1/71): (आदिः) आदि वर्ण (अन्त्येन इता) अन्तिम इत् वर्ण (सह) के साथ मिलकर प्रत्याहार बनाता है जो आदि वर्ण एवं इत्संज्ञक अन्तिम वर्ण के पूर्व आए हुए वर्णों का समष्टि रूप में बोध कराता है।

उदाहरण: अच् = प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐऔच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अपने आदि अक्षर 'अ' से लेकर इत्संज्ञक च् के पूर्व आने वाले औ पर्यन्त सभी अक्षरों का बोध कराता है। अतः,

अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ।

इसी तरह हल् प्रत्याहार की सिद्धि 5वें सूत्र हयवरट् के आदि अक्षर ह को अन्तिम 14 वें सूत्र हल् के अन्तिम अक्षर (या इत् वर्ण) ल् के साथ मिलाने (अनुबन्ध) से होती है। फलतः,

हल् = ह य व र, ल, ञ म ङ ण न, झ भ, घ ढ ध, ज ब ग ड द, ख फ छ ठ थ च ट त, क प, श ष स, ह।

उपर्युक्त सभी 14 सूत्रों में अन्तिम वर्ण (ण् क् च् आदि) को पाणिनि ने इत् की संज्ञा दी है। इत् संज्ञा होने से इन अन्तिम वर्णों का उपयोग प्रत्याहार बनाने के लिए केवल अनुबन्ध हेतु किया जाता है, लेकिन व्याकरणीय प्रक्रिया मे इनकी गणना नही की जाती है अर्थात् इनका प्रयोग नही होता है।

लघु सिद्धांत कौमुदी के अनुसार कुल महत्वपूर्ण प्रत्याहार 42 हैं। इन 42 प्रत्याहरो का प्रयोग ही मुख्यत संस्कृत व्याकरण में होता है। ये 42 प्रत्याहार हैं- अण् इण् यण् अक् इक् उक् एङ् अच् इच् एच् ऐच् अट् अम् अल् यम् ङम् ञम् यञ् झष् भष् अश् हश् वश् झश् जश् बश् छव् यय् मय् झय् खय् चय् यर् झर् चर् शर् हल् वल् रल् झल्